सुन्नत
का
मज़ाक़
न उड़ाऐं
ख़िताब
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब

सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ायें

खिताब

मौलाना मु० तक़ी उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लिमिटिड
422 मटिया महल, उर्दू मार्किट जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3265406,3279998, आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ायें
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मु० इमरान क़ासमी
संयोजक	मौ० नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	मार्च 2001
कम्प्यूटर किताबत	इमरान कम्प्यूटर सैन्टर मुज़फ़्फ़र नगर(0131-442408)

\>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लिमिटिड

422 मटिया महल, ऊर्दू मार्किट जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3265406,3279998, आवास 3262486

फ़ेहरिस्त

सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ाऐं

الحمدلله نحمد ہ ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لاشريك له ونشهد ان سيدناوسندنا ومولانا محمد ا عبده ورسوله صلى الله تعالى عليه وعلى اله وصحبه اجمعين وبارك وسلم تسليما كثيرا كثيرا۔

امابعد!عن ابى اياس سلمة بن عمروبن الاكوع رضى الله تعالىٰ عنه ان رجلا اكل عند رسول الله صلى الله عليه وسلم بشماله فقال: كل بيمينك، قال: لا استطيع، قال: لا استطعت، ما منعه الا الكبر، فمار فعه الى فيه۔ (صحیح مسلم)

ज़रा से तकब्बुर का नतीजा

हज़रत सलमा बिन अक्वा रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के सामने बायें हाथ से खाना खा रहा था, अरब वालों में बायें हाथ से खाना खाना आम था और अक्सर

लोग बायें हाथ से खाना खाते थे, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने देखा कि वह शख़्स बायें हाथ से खाना खा रहा है तो आप ने उस को तंबीह फ़रमाते हुए फ़रमाया, दायें हाथ से खाओ, यह हुक्म आप ने इस लिये फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से हमें ज़िन्दगी गुज़ारने के जो आदाब सिखाये गये हैं उन में दाहिनी तरफ़ को बायीं तरफ़ पर तर्जीह (वरीयता) हासिल है, इस लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० हर मामले में दाहिनी तरफ़ को बायीं तरफ़ पर तरजीह (वरीयता) दिया करते थे, ये अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का बताया हुआ अदब है, चाहे इस को कोई माने या न माने, चाहे किसी की अक़्ल इसको तसलीम करे या न करे, बहर हाल हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का यह हुक्म सुन कर उस शख़्स ने जवाब में कहा कि मैं दायें हाथ से नहीं खा सकता, और इस जवाब देने का सबब तकब्बुर था और उसने सोचा कि मुझे इस बात पर आप सल्ल० ने टोक कर मेरी तौहीन की है, इस लिये मैं हुक्म नहीं मानता, जवाब में आं हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि आईन्दा तुम कभी दायें हाथ से नहीं खा सकोगे, इस के बाद सारी उमर वह शख़्स अपना दाहिना हाथ मुंह तक नहीं ले जा सका।

काश ! हम सहाबा रज़ि० के ज़माने में होते

इस हदीस में हमारे लिये कई अज़ीमुश्शान सबक़ हैं, पहला सबक़ यह है कि बुहत सी बार नादानी और बे वक़ूफ़ी की वजह से हमारे दिलों में यह ख़्याल पैदा होता है कि अगर हम हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के ज़माने में पैदा होते तो कितना अच्छा होता, सहाबा किराम रज़ि० को हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सोहबत नसीब हुई, आप का दीदार नसीब हुआ, अगर हमें भी आप सल्ल० की सोहबत और दीदार नसीब होता और हम भी सहाबा रज़ि० की

फेहरिस्त में शामिल होते तो कितनी अच्छी बात थीं और कभी कभी यह ख़्याल शिकवे की सूरत इख़तियार कर लेता है कि अल्लाह तआला ने हमें उस ज़माने में क्यों पैदा नहीं फ़रमाया, आज हमारे लिये पन्दरहवीं सदी में दीन पर चलना मुश्किल हो गया है, माहौल खराब हो गया है, अगर उस ज़माने में होते तो चूंकि माहौल बना हुआ होता इसलिये माहौल में दीन पर चलना आसान होता।

अल्लाह तआला ज़र्फ़ के मुताबिक़ देते हैं

हमारे दिल में यह ख़्याल तो पैदा होता है लेकिन यह नहीं सोचते कि अल्लाह तआला जिस शख़्स को सआदत अता फ़रमाते हैं उसके ज़र्फ़ के मुताबिक़ अता फ़रमाते हैं,यह तो सहाबा –ए–किराम रिज़० का ज़र्फ़ था कि उन्होंने नबी करीम सल्ल० की सोहबत से फ़ायदा हासिल भी क्या और उसका हक़ भी अदा क्या, वह ज़माना बेशक बड़ी सआदतों का ज़माना था लेकिन साथ में बड़े ख़तरे का ज़माना भी था, आज हमारे पास हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के जो इरशादात हैं वे वासता दर वासता हो कर हम तक पहुंचे हैं, इस लिये उलमा–ए–किराम ने फ़रमाया कि जो ख़ब्रे वाहिद से साबित शुदा बात का इन्कार करदे और यह कहे कि मैं इस बात को नहीं मानता तो ऐसा शख़्स सख़्त गुनहगार होगा लेकिन काफ़िर नहीं होगा मुनाफ़िक़ नहीं होगा, और उस ज़माने में अगर किसी शख़्स ने कोई कलिमा हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की ज़बान मुबारक से बराहे रासत सुना और फिर उस का इन्कार किया, तो इन्कार करते ही कुफ़्र में दाख़िल हो गया। और हज़रात सहबा –ए–किराम रज़ि० को ऐसी ऐसी आज़माईशें पेश आयी हैं कि उन्हीं का ज़र्फ़ था कि उन आज़माईशों को झेल गये खुदा जाने

कि अगर हम उनकी जगह होते तो न जाने किस शुमार में होते। उस माहौल में जिस तरह हज़रत सिद्दीक़े अकबर, फ़ारूक़े आज़म, उसमान ग़नी और अली मुर्तज़ा रज़ि० पैदा हुऐ उसी माहौल में अबू जहल और अबू लहब भी पैदा हुए। अबदुल्लाह बिन उबई और दूसरे मुनाफ़िक़ीन भी पैदा हुए। इस लिए अल्लाह तआला ने जिस शख़्स के हक़ में जो चीज़ मुक़द्दर फ़रमायी है वही चीज़ उसके हक़ में बेहतर है। लिहाज़ा यह तमन्ना करना कि काश हम सहाबा किराम रज़ि० के ज़माने में पैदा होते यह नादानी की तमन्ना है, और ख़ुदा की पनाह, यह अल्लाह तआला की हिक्मत पर ऐतराज़ है। जिस शख़्स को अल्लाह तआला जितनी नेमत अता फ़रमाते हैं वह उसके ज़र्फ़ के मुताबिक़ अता फ़रमाते हैं।

आप ने उसको बद्दुआ क्यों दी ?

एक सवाल ज़ेहनों में यह पैदा होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के रहमतुल्लिल् आलमिन होने की शान तो यह थी कि किसी से अपनी ज़ात के लिये कभी इन्तक़ाम नहीं लिया और जहाँ तक हो सका आप सल्ल० ने लोगों के लिये दुआ ही फ़रमाई, बद– दुआ नहीं फ़रमाई तो सवाल यह पैदा होता है कि जब उस शख़्स से वक़्ती तौर पर ग़लती हो गई और उस ने यह कह दिया कि मैं दाँए हाथ से नहीं खा सकता तो आप ने फ़ौरन उस के लिये बद– दुआ क्यों फ़रमा दी कि आईनदा तुम्हें कभी मुँह तक हाथ उठा ने की तौफ़ीक़ न हो, उलमा–ए–किराम ने फ़रमाया कि बात दरअसल यह है कि उस शख़्स ने तकब्बुर की वजह से यह झूठ बोल दिया कि मैं दाँए हाथ से नहीं खा सकता हालांकि वह खा सकता था, और हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के हुक्म का इस तरह तकब्बुर की वजह से झूठ बोल कर मुक़ाबला करना अल्लाह

तआला के नज़दीक इतना बड़ा गुनाह है कि इस की वजह से आदमी जहन्नम का हक़दार हो जाता है, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने उस शख़्स पर शफ़क़त फ़रमाते हुए और उस को जहन्नम के अज़ाब से बचाने के लिये फौरन उसके हक़ में बद दुआ फ़रमादी ताकि इस गुनाह पर जो अज़ाब उस को मिलना है वो दुनिया ही के अन्दर मिल जाए, और इस दुनियावी अज़ाब के नतीजे में एक तरफ़ तो वह जहन्नम के अज़ाब से बच जाए और दूसरी तरफ़ उसको अज़ाब के बाद नेक अमल की तौफ़ीक़ हो जाए, इस हिक्मत की वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने उस के हक़ में बद दुआ फ़रमाई।

बुज़ुर्गो की मुख़्तलिफ़ शानें

इसी तरह कई बुर्ज़ुगाने दीन और औलिया अल्लाह से मनक़ूल है कि उनको किसी ने तक्लीफ़ दी और सताया तो उन्होंने उससे उसी वक़्त बदला ले लिया, वे हज़रात इसी शफ़्क़त की वजह से बदला ले लेते हैं, इस लिये कि अगर वे बदला न लें तो उस सताने वाले और तक्लीफ़ देने वाले पर उससे ज़्यादा बड़ा अज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा है, एक साहब एक बुर्ज़ुग के मुरीद थे, एक बार उन्होंने अपने शेख से कहा कि हज़रत ! हमने सुना है कि बुर्ज़ुगाने दीन और औलया–ए–किराम के रंग अलग अलग होते हैं, किसी की कुछ शान है किसी की कुछ शान है, मैं यह देखना चाहता हूँ कि उनकी शानें किस क़िस्म की होती हैं ? उनके शेख़ ने फ़रमाया कि तुम इसके पिछे मत पड़ो, अपने काम में लगे रहो तुम उनकी शानों को कहाँ पा सकते हो, मुरीद साहब ने कहा आप की बोत दुरुस्त है, लेकिन मेरा दिल चाहता है कि मुझे यह पता लग जाए कि बुर्ज़ुगों के क्या मुख़्तलिफ़ रगं होते हैं,

शेख़ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें देखने पर ज़िद ही है तो ऐसा करो कि फ़लां मस्जिद में चले जाओ, वहाँ तुम्हें तीन बुज़ुंग ज़िक्र करते हुए अल्लाह अल्लाह करते हुए मिलेगें, तुम जाकर उन तिनों की कमर में एक एक मुक्का मार देना और फिर जो कुछ वे बुज़ुंग करें मुझे आकर बता देना, चुनांचे यह साहब उस मस्जिद में गये तो वहाँ देखा कि वाक़ई तीन बुज़ुंग ज़िक्र में मशगूल हैं, शेख़ के हुक्म के मुताबिक़ उन्होंने जाकर एक बुज़ुंग को पीछे से एक मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा कि किस ने मुक्का मारा, बल्कि अपने ज़िक्र में मशगूल रहे उसके बाद जब दूसरे बुज़ुंग को मुक्का मारा तो वे पीछे मुड़े और इन मुक्का मारने वाले का हाथ सहलाने लगे और फ़रमाने लगे कि भाई ! तुम्हें तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? चौट तो नहीं लगी ? और जब तीसरे बुज़ुंग को मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़ कर इतनी ही ज़ोर से उनको मुक्का मार दिया और फिर अपने ज़िक्र में मश्ग़ूल हो गये।

यह साहब अपने शेख़ के पास वापिस गये और उनसे जाकर अर्ज़ किया कि हज़रत! इस तरह क़िस्सा पेश आया कि जब पहले बुज़ुंग को मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। और जब दूसरे को मारा तो वे उल्टा मेरे ही हाथ को सहलाने लगे, और जब तीसरे बुज़ुंग को मारा तो उन्होंने मुझसे बदला लिया और मुझे भी एक मुक्का मार दिया। शैख़ ने फ़रमाया कि तुम यह पूछ रहे थे कि बुज़ुर्गों की मुख़्तलिफ़ शानें क्या होती हैं तो यह तीन शानें तुमने अलग अलग देख ली हैं। एक शान वो है जो पहले बुज़ुंग में थी। उन्होंने यह सोचा कि मैं तो अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हूँ। और इस ज़िक्र में जो लज़्ज़त और मज़ा आ रहा है उसको छोड़कर मैं पीछे क्यों देखूं कि कौन मुक्का मार रहा है

और अपना वक़्त क्यों ज़ाया करूं। दूसरे बुज़ुर्ग पर मख़्लूक़ पर शफ़्क़त और रहमत की शान ग़ालिब थी। इसलिये उन्हों ने न सिर्फ़ यह कि बदला नहीं लिया बल्कि उस मारने वाले के हाथ को देख रहे हैं कि तुम्हारे हाथ में कोई चोट तो नहीं लगी। और तीसरे बुज़ुर्ग ने जल्दी से बदला इसलिये ले लिया कि कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तआला उनका बदला लेने के लिये उस पर अपना आज़ाब नाज़िल फरमा दें, और इस बदला लेने से वह आख़िरत के बदले से भी बच जाये, इसी तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने भी उस शख़्स के हक़ में बद-दुआ फ़रमाकर उस शख़्स को बड़े आज़ाब से बचा लिया।

हर अच्छा काम दाहिनी तरफ़ से शुरू करें

बहर हाल हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सुन्नतों की तौहीन करने से बचना चाहिये। आज कल तो लोग इस क़िस्म की सुन्नतों के बारे में तौहीन भरा अन्दाज़ इख़्तियार करते हुए कहते हैं कि मियां! इन छोटी छोटी चीज़ों में क्या रखा है कि दाहिने हाथ से खाओ और बायें हाथ से न खाओ, याद रखें हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की कोई सुन्नत छोटी नहीं, चाहे बज़ाहिर देखने में वो छोटी मालूम होती हो। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० का हर हुक्म आपकी हर सुन्नत, आप का हर अमल इस दुनिया के लिये नमूना है, चुनांचे आप ने हर अच्छा काम दाहिनी तरफ़ से शुरू करने का हुक्म दिया है, जैसे दाहिने हाथ से खाओ, दाहिने हाथ से पियो, अगर मजमे में कोई चीज़ तक़्सीम करनी है तो दाहिनी तरफ़ से शुरू करो, और हदीस में है कि:

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يعجبه التيمن فى تنعل

ترجله وطهوره فى شانه كله (صحيح بخارى)

यानी हुज़ुरे अक़्दस सल्ल० हर चीज़ में दाहिने हाथ से शुरूआत करने को पसन्द फ़रमाते थे, हत्ता कि लिबास पहनने के बारे में फ़रमाया कि पहले दाहिनी आसतीन में हाथ डालो फिर बायीं आसतीन में हाथ डालो, जूता पहनना है तो पहले दायां जूता पहनो और फिर बायां जूता पहनो, बालों में कंघी करनी है तो पहले दायीं तरफ़ कंघी करो और फिर बायीं तरफ़ करो, आंखों में सुर्मा डालना है तो पहले दाहिनी आंख में सुर्मा डालो फिर बायीं आंख में सुर्मा डालो, हाथ धोते वक़्त पहले दायां हाथ धोओ फिर बायां हाथ धोओ, इस तरह आपने हर चीज़ में दायीं तरफ़ से शुरू करने का हुक्म फ़रमाया।

एक वक़्त में दो सुन्नतों का इज्तिमा

बज़ाहिर ये मामूली सुन्नतें हैं, लेकिन अगर इन्सान इन सुन्नतों पर अमल करले तो हर अमल पर अल्लाह तआला की तरफ़ से महबूबियत का परवाना मिल रहा है और इस पर अज्र व सवाब मिल रहा है, अगर इन्सान महज़ ग़फ़लतों और ला परवाही से इन सुन्नतों को छोड़ दे और इन पर अमल न करे तो इससे ज़्यादा ना क़दरी और क्या हो सकती है ? इस लिये पाबन्दी से हर काम इन्सान दायीं तरफ़ से शुरु करे यहाँ तक कि बुर्जुगों ने यहाँ तक फ़रमाया है कि देखिये कि ये दो सुन्नतें हैं एक यह कि जब आदमी मस्जिद से बाहर निकले तो पेहले बायां पैर निकाले और फ़िर दायां पैर निकाले और दूसरी सुन्नत यह है कि जब जूता पहने तो पहले दाएं पांव में ड़ाले फिर बाएं पांव मे ड़ाले, तो इन दोनों सुन्नतों को इस तरह जमा करें कि मस्जिद से पहले बायां

पैर निकाल कर जूते के ऊपर रखलें और फिर दायां पैर निकाल कर जूता पहनें और फ़िर बायें पैर में जूता पहनें, इस तरह दानों सुन्नतों पर अमल हो जायेगा।

हर सुन्नत अज़ीम है

हज़रात सहाबा–ए–किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन के यहाँ इस का इम्तियाज़ नहीं था कि कौन सी सुन्नत छोटी है और कौन सी सुन्नत बड़ी है बल्कि उनके नज़दीक हर सुन्नत अज़ीम थी इस लिये वे तमाम सुन्नतों पर अमल करने का एहतमाम करते थे हक़ीक़त यह है ज़रा सा एहतमाम करने से इंसान के आमाल नामे में नेकियों का ज़ख़ीरा जमा होता चला जाता है, इस लिये सुन्नतों पर अमल करने का एहतमाम करना चाहिये।

युरोपी तहज़ीब की हर चीज़ उलटी है

हज़रत क़ारी मौहम्मद तय्यब साहब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि नयी पश्चिमी तहज़ीब में पहली तहज़ीब के मुक़ावले में हर चीज़ उल्टी है और फिर मज़ाक़ में फ़रमाते कि पहले चिराग़ तले अंधेरा होता था और अब बल्ब के ऊपर अंधेरा होता है इस पश्चिमी तहज़ीब ने हमारी क़दरों को बा–क़ायदा एहतमाम करके बदला है चुनांचे आज कल की तहज़ीब यह है कि खाना खाते वक़्त कांटा और छुरी दाएं हाथ में पकड़ी जाये और बाएं हाथ से खाया जाये।

आज से कई साल पहले मैं हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा था मेरी साथ वाली सीट पर एक और साहब बैठे हुऐ थे सफ़र के दौरान उनसे ज़रा बे–तकल्लुफ़ी भी हो गई थी, जब खना आया

तो उन साहब ने मामूल के मुताबिक़ दाएं हाथ से छुरी ली और बाएं हाथ से खाना शुरु कर दिया मैं ने उनसे कहा कि हमने हर चीज़ में अंगरेज़ की पैरवी शुरु कर रखी है और नबी करीम सल्ल०की सुन्नत यह थी कि आप दाएं हाथ से खाते थे इसलिये अगर आप दाएं हाथ से खालें तो आप का यही अमल सवाब क ज़रिया बन जायेगा, वह जवाब में कहने लगे कि असल में हमारी क़ौम इसी वजह से पीछे रह गयी है कि वे इन छोटी छोटी चीज़ों के पीछे पड़े हुए हैं, इन मौलवियों ने इन चीज़ों के अंदर हमारी क़ौम को फंसा दिया और तरक़्क़ी का रास्ता रोक दिया और जो बड़े बड़े काम थे उन में हम पीछे रह गये।

मग़्रिबी दुनिया फिर क्यों तरक़्क़ी कर रही है ?

मैं ने उनसे अर्ज़ किया कि माशाअल्लाह आप तो लंबी मुद्दत से इस तरक़्क़ी याफ़ता तरीक़े से खा रहे हैं इस तरक़्क़ी याफ़ता तरीक़े से आप को कितनी तरक़्क़ी हासिल हुई? और आप कितने आगे बढ़ गये ? और कितने लोंगो पर आप को बरतरी हासिल हो गई ? इस पर वह खामोश हो गये, फिर मैंने उनको समझाया कि मुसल्मानों कि तरक़्क़ी और सर बुलन्दी तो नबी करीम सल्ल०के तरीक़ों पर अमल करने में है और दूसरे तरीक़ों पर अमल करने में नहीं, अगर मुसल्मान दूसरे तरीक़ों को इख़्तियार करेगा तो वह सर बुलंद नहीं हो सकता। उन साहब ने कहा आप ने अजीब बात कही कि तरक़्क़ी सुन्नतों पर अमल करने में है यह सारी मग़्रिबी क़ौमें कितनी तरक़्क़ी कर रही हैं हालांकि वे क़ौमें उलटे हाथ से खाती हैं सारे काम सुन्नत और शरीअत के ख़िलाफ़ करती हैं गुनाहों के अंदर बुरी तरह मुब्तला हैं बुराईयों और गुनाहों के काम करती हैं और शराबें पीती हैं और जुआ खेलती हैं इसके बावजूद

वे कौमें तरक़्क़ी कर रही हैं और पूरी दुनिया पर छाई हुई हैं, लिहाज़ा आप जो कहते हैं कि सुन्नतों पर अमल करने से तरक़्क़ी होती है लेकिन हमें तो नज़र आ रहा है कि सुन्नतों के खिलाफ़ और शरिअत के खिलाफ़ काम करने से दुनिया में तरक़्क़ी हो रही है।

बूझ बुजक्कड़ का क़िस्सा

मैं ने उनसे कहा कि आप ने यह जो फ़रमाया कि मग़रिबी कौमें सुन्नतों के छोड़ने के बावजूद तरक़्क़ी कर रही हैं लिहाज़ा हम भी इसी तरह तरक़्क़ी कर सकते हैं इस पर मैंने उनको एक क़िस्सा सुनाया वह यह कि एक गांव में एक शख़्स खजूर के पेड़ पर चढ़ गया किसी तरह चढ़ तो गया लेकिन पेड़ से उतरा नहीं जा रहा था, अब उसने ऊपर से गांव वालों को आवाज़ दी कि मुझे उतारो। अब लोग जमा हो गये और आपस में मश्विरा किया के किस तरह इस को पेड़ से उतारें, किसी की समझ में कोई तरीक़ा नहीं आ रहा था उस ज़माने में गांव के अन्दर एक बूझ बुजक्कड़ होता था जो सब से ज़्यादा अक़ल–मंद समझा जाता था, गांव वाले उसके पास पहुंचे और उसको जाकर सारा क़िस्सा सुनाया कि इस तरह एक आदमी पेड़ पर चढ़ गया है उसको किस तरह उतारें ? उस बूझ बुजक्कड़ ने कहा यह तो कोई मुश्किल नहीं, ऐसा करो कि एक रस्सा लाओ और जब रस्सा लाया गया तो उसने कहा कि अब रस्सा उस शख़्स की तरफ़ फेंको और उस शख़्स से कहा कि तुम इस रस्से को अपनी कमर से मज़बूती से बांध लो, उसने जब रस्सा बांध लिया तो अब लोगों से कहा कि तुम इस रस्से को ज़ोर से खींचो, जब लोगों ने रस्सा खींचा तो वह शख़्स पेड़ से नीचे गिरा और मर गया, लोगों ने उस

बूझ बुजक्कड़ से कहा कि यह आप ने कैसी तरकीब बताई, यह तो मर गया। उसने जवाब दिया कि मालूम नहीं क्यों मर गया, शायद इसकी मौत ही आ गई थी इस लिये मर गया वर्ना मैंने इस तरीक़े से बेशुमार लोगों को कुएं से निकाला है और वे सही सालिम निकल आये।

मुसल्मानों की तरक़्क़ी का रास्ता सिर्फ़ एक है

इस बूझ बुजक्कड़ ने खजूर के पेड़ पर चढ़े शख़्स को कुएं के अन्दर गिरे हुए शख़्स पर अंदाज़ा किया यही अंदाज़ा यहां भी किया जा रहा है और यह कहा जा रहा है कि ग़ैर मुस्लिम कौमें गुनाहों और बुराईयों और ना—फ़रमानी के ज़रिये तरक़्क़ी कर रही हैं इस तरह हम भी ना—फ़रमानियों के साथ तरक़्क़ी कर जायेंगे, यह अंदाज़ा दरूस्त नहीं, याद रखें जिस क़ौम का नाम मुसल्मान है जो कलिमा तय्यिबा لا اله الاالله محمد رسول الله पर ईमान लायी है वह अगर चे सर से लेकर पांव तक इन क़ौमों का तरीक़ा अपना ले और अपना सब कुछ बदल दे तब भी सारी ज़िन्दगी कभी तरक़्क़ी नहीं कर सकती, हां अगर वह तरक़्क़ी करना चाहती है तो एक मरतबा —— खुदा की पनाह —— इस्लाम के चोले को अपने जिस्म से उतार दे और यह कह दे कि हम मुसल्मान नहीं हैं फिर उनके तरीक़ों को इख़्तियार करले तो अल्लाह तआला उनहें भी दुनिया में तरक़्क़ी दे देगें लेकिन मुसल्मान के लिये वह ज़ाबता और कानून नहीं है जो काफ़िरों के लिये है। मुसल्मान के लिये दुनिया में भी अगर कोई तरक़्क़ी करने का रास्ता है तो सिर्फ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की पैरवी है, इसके अलावा मुसल्मानों की तरक़्क़ी का कोई रास्ता नहीं है।

सरकारे दो आलम सल्ल० की

गुलामी इख़्तियार कर लो

बात दरअसल यह है कि हमारे दिल व दिमाग़ में यह बात बैठ गई है कि मग़रिबी क़ौमें जो काम कर रही हैं वे पैरवी के काबिल हैं और नबी करीम सल्ल० की सुन्नत ——— खुदा की पनाह ——— एक मामूली सी चीज़ है और पैरवी के क़ाबिल नहीं है, बल्कि तरक़्क़ी की राह में रूकावट है, हालांकि सोचने की बात यह है कि अगर तुमने दायें हाथ से खाना खा लिया तो तुम्हारी तरक़्क़ी में कौन सी रूकावट आ जायगी, लेकिन हमारे दिल व दिमाग़ पर गुलामी मुसल्लत है सरकार–ए–दो आलम सल्ल० कि गुलामी छोड़ कर उनकी ग़ुलामी इख्तियार करली है, उसका नतीजा यह है कि ग़ुलामी के अन्दर जी रहे हैं और गुलामी के अन्दर मर रहे हैं और अब इस गुलामी से निकलना भी चाहते हैं तो निकला नहीं जाता, निकलने का कोई रासता नज़र नहीं आता और सच्ची बात यह है कि उस वक़्त तक इस ग़ुलामी से नहीं निकल सकते और इस दुनिया में इज़्ज़त और सर बुलन्दी हासिल नहीं कर सकते जब तक एक मरतबा सही मायने में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की ग़ुलामी क़ुबूल नहीं कर लेंगे और सरकार–ए–दो आलम मुहम्मद मुसतफ़ा सल्ल० के नक़शे क़दम पर नहीं चलेंगे।

सुन्नत के मज़ाक से कुफ़्र का अंदेशा है

अलबत्ता यह बात ज़रूरी है कि सुन्नत सिर्फ़ इनहीं चीज़ों का नाम नहीं कि आदमी दायें हाथ से खाना खाले और दायीं तरफ़ से कपड़ा पहन ले बल्कि ज़िन्दगी के हर शोबे से सुन्नतों का

तअल्लुक़ है, इन सुन्नतों में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के अख़्लाक़ भी दाखिल हैं आप लोगों के साथ किस तरह मुआमला फ़रमाते थे ? किस तरह खुशी और मुसर्रत के साथ मुलाक़ात करते थे ? किस तरह लोगों की तक्लीफ़ों पर सब्र फ़रमाते थे ये सब बातें भी इन सुन्नतों का हिस्सा हैं लेकिन कोई सुन्नत ऐसी नहीं है जिस्को छोटा समझ कर उसकी तौहीन की जाये, देखिये फर्ज़ करें कि अगर किसी शख़्स को किसी सुन्नत पर अमल की तौफ़ीक़ नहीं हो रही है तो कम से कम उस शख़्स को बेहतर समझे जिसको उस सुन्नत पर अमल करने की तौफ़ीक़ हो रही है। लेकिन उस सुन्नत का मज़ाक उड़ाना उस को हक़ीर समझना, उस को बुरा क़रार देना उस पर आवाज़ें कसना इन अफ़्आल से उस शख़्स पर कुफ़्र का अंदेशा है। इस लिये मामूली से मामूली सुन्नत के बारे में भी कभी ज़िल्लत व हक़ारत का कलिमा ज़ुबान से नहीं निकालना चाहिये। अल्लाह तआला हर मुसल्मान को महफ़ूज़ रखे आमीन।

अगली हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० अपनी तालीमात की एक मिसाल ब्यान फ़रमाते हैं कि:

हुज़ूर सल्ल० की तालीमात और उसको कुबूल करने वालों की मिसाल

عن ابی موسیٰ رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم : ان مثل مابعثنی الله من الهدی والعلم کمثل غیث اصاب ارضاء، فکانت منها طائفة طیبة الخ (صحیح بخاری)

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी मिसाल और जिन तालीमात को मैं

देकर अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजा गया हूं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक ज़मीन पर बारिश हुई और वह ज़मीन तीन किस्म की थी।

पहली क़िस्म की ज़मीन बड़ी उगाने वाली थी जब उस पर बारिश हुई तो उस ज़मीन ने पानी को पी लिया और फिर उस ज़मीन में से फूल और पौदे निकल आये।

दूसरी क़िस्म की ज़मीन सख़्त थी जिसकी वजह से पानी अन्दर रामा नहीं सका बल्कि ऊपर ही जमा हो गया, और फिर उस पानी से बहुत से इंसानों ने और जानवरों ने फ़ायदा उठाया।

तीसरी क़िस्म की ज़मीन में न तो उगाने की सलाहियत थी और न पानी को ऊपर जमा करने की सलाहियत थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि बारिश का पानी उस पर बरसा और वह पानी बे फ़ायदा चला गया।

लोगों की तीन क़िस्में

फिर फ़रमाया कि इसी तरह मैं जो तालीमात लेकर आया हूं वे बारिश की तरह हैं और उन तालीमात को सुनने वाले तीन तरह के लोग हैं बाज़ लोग वे हैं जिन्होंने इन तालीमात को अपने अन्दर हज़म करके उन से फ़ायदा उठाया और इसके नतीजे में उनके आमाल और अख़लाक दुरूस्त हो गये और वे अच्छे इंसान बन गये। और वे लोगों के लिये बेहतरीन नमूना बन गये और दूसरे लोग वे हैं जिन्होंने मेरी तालीमात को हासिल किया फिर खुद भी उस से फ़ायदा उठाया और दूसरे लोगों के फ़ायदे के लिये उसको जमा कर लिया और फिर वे उन तालीमात को पढ़ने, सिखाने, वअ्ज़ और दावत के ज़रिये दूसरों तक पहूंचा रहे हैं। तीसरी क़िस्म के लोग वे हैं जिन्होंने मेरी तालीमात को एक कान से सुना

और दूसरे कान से निकाल दिया, न उनसे खुद फ़ायदा उठाया और न उनके ज़रिये दूसरों को फ़ायदा पहुंचाया।

इस हदीस के ज़रिये इस बात की तरफ़ आप ने इशारा फ़रमाया कि मेरी तालीमात के बारे में दो बातों में से एक बात इख़्तियार कर लो या तो खुद इससे फ़ायदा उठाओ और दूसरों को भी इसके ज़रिये फ़ायदा पहुंचाओ या कम से कम खुद इससे फ़ायदा उठा लो। इस लिये कि तीसरा रासता बरबादी का है, वह यह है कि मेरी तालीमात सुन कर पीठ पीछे डाल दो, इसी बात को एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इस तरह ब्यान फ़रमाया कि:

كن عالما او متعلما ولا تكن ثالثا فتهلك

यानी या तो तुम दीन के आलिम बन जाओ कि खुद भी अमल करो और दूसरों तक पहुंचाओ या इस इल्मे दीन के सीखने वाले बन जाओ। कोई तीसरी सुरत इख़्तियार मत करो वरना तुम हलाक और बरबाद हो जाओगे।

दूसरों को दीन की दावत दें

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सुन्नतों और तालीमात के बारे में एक मुसल्मान का असल फरीज़ा यह है कि वह खुद उस पर अमल करे और दूसरों तक उसको पहुंचाये, अगर खुद अमल कर लिया और दूसरों तक नहीं पहुंचाया तो सिर्फ़ यह नहीं होगा कि नाक़िस रहेगा बल्कि उसने जो नफ़ा हासिल किया है उसके भी हाथ से जाते रहने का अंदेशा है। इस लिये कि अगर उसका अपना माहौल दुरूस्त नहीं होगा तो वह किसी भी वक़्त फिसल जायेगा, जैसे एक शख़्स दीनदार बन गया नमाज़ पाबन्दी से पढ़ने

काम यह है कि वह घबराये नहीं उक्ताये नहीं मायूस न हो बल्कि उनसे कहता रहे और इसके पीछे न पड़े कि मेरी बात का तो उन पर कोई असर नहीं हुआ लिहाज़ा अब आइन्दा उनको कहने से क्या फ़ायदा ? बल्कि मौक़े मौक़े पर मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से अपनी बात पहुंचाता रहे याद रखिये ! अच्छी बात किसी न किसी वक़्त अपना असर दिखाती है और उसके असरात ज़रूर ज़ाहिर होते हैं, और अगर मान लीजिये किसी के मुक़द्दर में हिदायत नहीं थी तो भी तुम्हारा उसको दावत देना खुद तुम्हारे हक़ में फ़ायदामंद है, और उस पर तुम्हारे लिये अज्र व सवाब लिखा जा रहा है, और खुद भी हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सुन्नतों और तालीमात पर अमल करने की कोशिश करता रहे और जो कोताही हो जाये उस पर इस्तिग़फ़ार करता रहे और माफ़ी मांगता रहे। सारी उमर यह करता रहे तो इंशाअल्लाह बेड़ा पार हो जायेगा। अलबत्ता ग़फ़्लत बहुत बुरी चीज़ है इस ग़फ़लत से बचने की कोशिश करता रहे अल्लाह तआला हम सब की ग़फ़्लत से हिफ़ाज़त फ़रमाये और हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये आमीन।

واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين